लक्की

❑ रजतकृष्ण

जिन बालकों के मानसिक विकास की गति किन्हीं कारणों से सामान्य न होकर मंद होती है उन्हें बहुधा दोहरी समस्या से जूझना पड़ता है । एक ओर तो वे अपनी इस असामान्य स्थिति को समझ नहीं पाते, खुद पर झुंझलाते हैं और अपने को दूसरे बच्चों से बराबरी पर लाने के लिए छटपटाते हैं। दूसरी ओर, उन्हें 'मंद बुद्धि' बालक के रूप में अक्सर लोगों की उपेक्षा का सामना करना पड़ता है । प्रस्तुत शब्द-चित्र हमें एक ऐसे बच्चे के मन में झांकने का अवसर देता है और यह सोचने को प्रेरित करता है कि क्या हमें ऐसे बच्चों के प्रति अधिक संवेदनशील नहीं होना चाहिये ?

प्रायः बच्चे जन्मजात कलाकार होते हैं । प्रायः सब में प्रतिभा कूट-कूट कर भरी होती है । उन्हें हम उनके मुताबिक चलने दें तो वे ज्यादा आगे बढ़ सकते हैं । लेकिन हम उन्हें ऐसा करने कहां देते हैं ? हम तो अपने सपने, अपने आदर्श और अपने विचारों का बोझ उन पर लाद देते हैं ।

बच्चों के बारे में बाहर से आये एक मित्र के साथ कुछ इसी तरह की बातें चल ही रही थी कि लक्की आ गया हमारे कमरे में ।

लक्की हमारे पड़ोस में रहने वाले कॉलेज-चौकीदार संतराम जी का 13-14 साल का लड़का है जो छठी में पढ़ता है ।

मैंने अपने मित्र से कहा - आप इससे इसका नाम पूछिए । उन्होंने पूछा परंतु लक्की ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया । मित्र ने दुबारा पूछा । लक्की चुप ही रहा । फिर मैंने कहा - अब मैं पूछता हूं , देखिए । मैंने लक्की को आंखों से इशारा किया और बोला, इन्हें अपना नाम बताओ, नाम ।

लक्की बोला - अबिचेक चाहू । मैंने मित्र को बताया, यह थोड़ा तेज बोलने पर सुनता है और बोलने के साथ इशारे करो तो ज्यादा अच्छे से मतलब समझता है। यह शब्दों का उच्चारण ठीक से नहीं कर पाता है। इसने अपना नाम जो बताया वो है अभिषेक साहू। इससे पिता का नाम पूछो तो चंत राम चाहू कहेगा और दादा का नाम नैया लाल चाहू । जिनका मतलब होगा - संत राम साहू, कन्हैया लाल साहू ।

लक्की पेपर में या कहीं भी कोई ऐसा शब्द देखता है जो 'अ' से शुरू हो तो उसके लिये अभिषेक होता है, स से शुरू हुआ शब्द सन्त राम और क से शुरू हुआ शब्द कन्हैया लाल, जिसे यह नैया लाल ही कहता है क्योंकि ''कन'' का उच्चारण यह नहीं कर पाता।

आगे मैंने मित्र को बताया कि लक्की में भी अन्य बच्चों की तरह प्रतिभा की कमी नहीं है । यह बहुत मनोयोगपूर्वक चित्रकारी किया करता है । मिट्टी से मूर्तियां भी बना लेता है।

यह पढ़ो कहने पर भले आपका मुंह ताकता रहेगा, लेकिन लिखो कहो तो सब कुछ सही-सही उतार कर दे सकता है । हां, वह लिखना आपके बोले हुए को नहीं बल्कि छपे हुए का होना चाहिए। फिर मेरे मित्र ने अखबार उठाकर लक्की को दिया, चलो यह लिखो तो। वह एक समाचार का शीर्षक था, जिसे लक्की ने झट लिख दिया।

हमारे पड़ौस में चार एक साल पहले ही आया है लक्की । सो मैं उसके बचपन के बारे में कुछ नहीं जानता था । एक दिन उसकी मां (जिन्हें हम लोग दीदी कहते हैं) से पूछा कि दीदी यह बचपन में कैसा था ? उन्होंने बताया - इसे बचपन में सर्दी बहुत लगती थी, जिस वजह से कान भी अक्सर बंद हो जाता था । इसने बोलना भी बहुत बाद में शुरू किया, वह भी बहुत अस्पष्ट-सा । डाक्टरों के हिसाब से समझ-बूझ के मामले में यह अन्य बच्चों की अपेक्षा अपनी उम्र से चार-पांच साल पीछे चलता रहेगा । यानि दूसरे बच्चे जिस चीज को दस साल की उम्र में जान समझ सकते हैं उसे ये कोई पंद्रह साल की उम्र में जान-समझ पाएगा ।

मैंने कहा -लेकिन मुझे तो इसके पास दिमाग पर्याप्त जान पड़ता है दीदी । मैं जो काम बताता हूं उसे पूरा करता है व इसकी याददाश्त भी कोई कमजोर नहीं कही जा सकती । ये आपके घर परिवार की पुरानी बातें मुझे अक्सर बताता रहता है। नाते रिश्तेदारों से जुड़े रोचक प्रसंगों को भी खुश होकर सुनाया करता है। जैसे कि अभी पिछली गर्मी में आप लोग किसी शादी में गये थे न, तब वहां कौन मामा मौसा कि काका बाबा ने साथ बैठकर खाया पिया । क्या-क्या खाया और कैसी-कैसी हरकत करते रहे, ये खुद अभिनय कर करके बता रहा था, उस दिन । सबका नाम बताता है, उनकी बातचीत का ब्यौरा भी देता है।

हां, नाते रिश्तेदारों की गतिविधियों को ये चट से पकड़ लेता है। कहीं बाहर घूमने जाते हैं तो वहां के दृश्य यह बहुत दिनों तक बार-बार दुहराते रहता है। अपने हिसाब से यह चीजों का अर्थ लगाने में भी तेज है । जैसे कि उस दिन इसके पापा एक खाली बोतल ले आये तो यह उनसे सख्त नाराज हुआ कि आप भी दूसरों की तरह दारू पीने जैसा गंदा काम करने लगे हो । वो सफाई देते रहे कि नहीं पीता, बेटा यह तो पड़ी थी बस उठा लाया । लेकिन यह तर्क देने लगा कि जब पीते नहीं तो खाली बोतल आयेगी कहां से ।

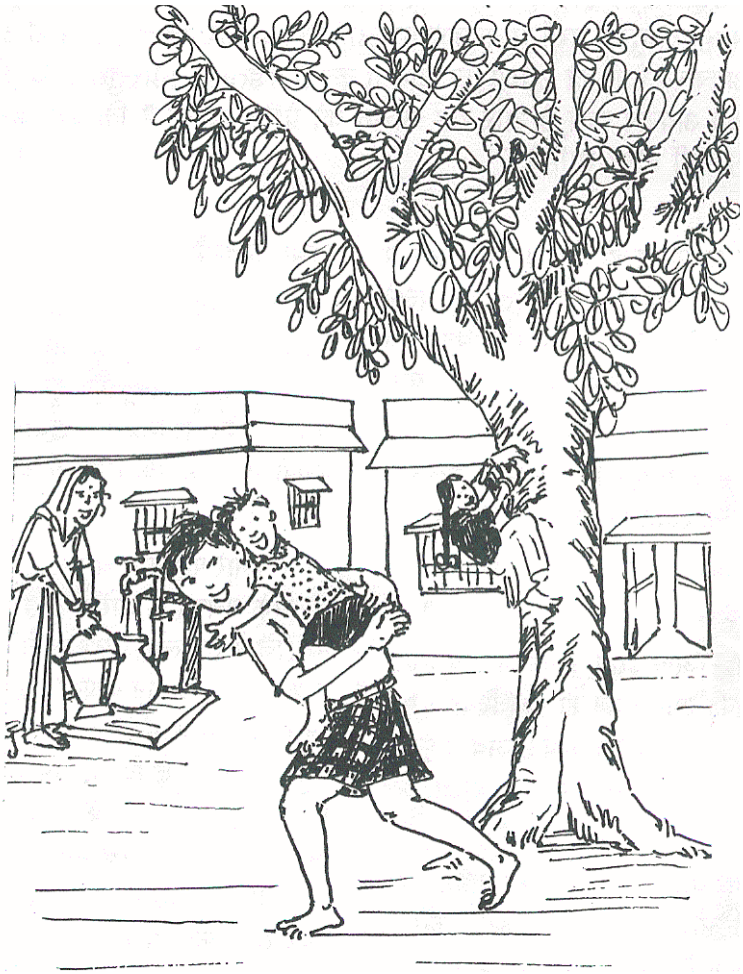

वैसे लक्की गुस्साता भी जल्दी है और अन्य लड़कों की तरह एक सीमा के बाद गुस्से में उत्तेजित हो तोड़-फोड़, उठा पटक पर उतारू हो जाता है।

लक्की को कपड़े हमेशा साफ सुथरे चाहिये । स्कूल ड्रैस को वो हमेशा अंदर करके पहनना पसंद करता है। विशेष अवसरों पर टाई, टोपी, चश्मा व जूते मौजे पहनना लक्की का शौक है।

उसके इस तरह के पहनावे व रहन सहन को देखते हुए कोई भी नहीं कह सकता कि लक्की अन्य लड़कों से किसी भी मामले में कमजोर होगा । वैसे लक्की अन्य लड़कों से किसी भी मामले में हमेशा खेलते-कूदते, हंसी ठट्ठा करते, गाली-गलौज करते व उन्हें छेड़ते गुदगुदाते कभी भी देखा जा सकता है। धीरे-धीरे उसकी भाषा और व्यवहार को साथी लड़के समझने भी लगे हैं । हां, दिक्कत आती है तो तब जब कि बात लिखाई पढ़ाई करने की हो । वह कापी-किताब निकाल तो जरूर लेता है, पर आगे वह करे क्या उसे नहीं सूझता । बाकी लड़के जब लिख पढ़ रहे हों तो वह फकत मुंह ताकते बैठा रहेगा । बच्चे कई बार उसकी मजबूरी समझ नहीं पाते और बड़े उसे समझना नहीं चाहते। उल्टे हंसी उड़ा देते हैं । लक्की इसे कभी समझता है तो कभी नहीं। परंतु जब समझता है तो वो उदास हो उठता है। उदास होकर कभी कभी मुझे कहता भी है, '' मुझे लिकना नहीं आता, परना नई आता, त्या तरूँ मामा ? ''

लक्की को उसके घर वालों के अलावा यदि किसी और से खुलकर बोलते बतियाते देखना हो तो वो मैं ही हूं । मेरे मित्र मुझसे कहते भी हैं कि यार पता नहीं तू कैसे इसकी भाषा समझ पाता है और कैसे इसे समझा पाता है। तब मैं एक ही बात कहता हूं कि इसे समझना और समझाना तुमसे भी संभव है, बस तुम इसे इत्मीनान से सुनो एक बार दो बार तीन बार । तुम समझ जाओगे कि यह कहना क्या चाहता है फिर उसके साथ थोड़े ऊंचे शब्दों में आंखों में आखें डाल इशारे करते हुए बोलो तो अपनी बात भी इसे समझा सकते हो, अपना काम भी करवा सकते हो । लेकिन मित्रगण 'भगवान बचाये' कहकर टाल जाते हैं।

लक्की मुझसे अपनी खुशियां तो बांटता ही है, दुख भी सुनाने से पीछे नहीं हटता। जब वह बुखार में रहेगा तो मुझे आकर बताएगा कि मामा बुखार में मेरा शरीर गरम है छू के देखो । कितनी बार उल्टी हुई, डॉक्टर ने क्या कहा है, सब बतायेगा । बीच में उसका इलाज कहीं चल रहा था तो मुझे बार बार बताया करता था कि डॉक्टर ने ज्यादा मिर्ची खाने को मना किया है । खट्टा भी नहीं खाना है, पानी गरम पीना है। मजा नहीं आता यह सब, क्या करूं मामा ?

वह कई बार मुझे अपनी कुछ बातें बताना चाहता है और तब मेरे पास कोई दूसरा बैठा हो तो बड़ा परेशान हो जाता है। सामने वाला कब उठकर जाये तो मैं अपनी बात सुनाऊं इस जुगाड़ में दसों बार मेरे कमरे के अंदर-बाहर को होता है । मैं समझ जाता हूं उसका भाव; सो मौका देखकर खुद उसे बुला लेता हूं, ''क्या बात है लक्की?'' कभी झट बता देगा पर कभी झेंप जाता है और आंखों से इशारे कर देता है सामने वाले को जाने दो ।

अभी थोड़े दिनों पूर्व ही लक्की अपने चाचा के गांव से गर्मी की छुट्टी बिता कर लौटा और वहां की बातें बताने को लालायित हुआ । परंतु मेरे पास कुछ लोग बैठे थे तो वही अंदर बाहर का काम चालू किया । मैंने उसे बुलाया तो झट जेब से मुड़ा तुड़ा एक प्रिंटेड कार्ड निकाला और दिखाया - ''ये निमंत्रण कार्ड है मामा, वहां न बच्चा हुआ था तो हम लोग पार्टी में गये थे, खूब मजा आया सच्ची।'' अब लता दीदी (लक्की की बड़ी दीदी, जिसकी शादी ड़ेढेक साल पहले हुई है) का भी बच्चा होने वाला है, तो मैं वहां भी जाऊंगा। बच्चे को गोद में खिलाऊंगा । मेरे जीजा मुझे लेने आएंगे । और फिर वह अपने जीजा के बारे में बताने लगा कि वह फुल पेंट पहनते हैं। शादी में ऊंचा वाला टोपी पहने थे । माथे पे दुल्हन जैसी टिकली भी लगाये थे । फोटो भी खिंचाया ।

लक्की को अपने रिश्तेदारों की बात बताने के अलावा सबसे अधिक कुछ पसंद है तो वो है बच्चा खिलाना। मुहल्ले के अपने परिचितों के छोटे बच्चों को पाने खिलाने का मौका वह ढूंढता रहता है और उसे अक्सर किसी न किसी बच्चे को गले लगाए देखा जा सकता है। हालांकि बच्चे के मां बाप डरते भी हैं, कि यह कम अक्ला है, कहीं गिरा पटक दिया तो आफत हो जाएगी । लेकिन नहीं, लक्की कम अक्ला बिल्कुल नहीं है, न ही उससे कभी ऐसा हुआ है। बल्कि रोता हुआ बच्चा उसके पास आकर चुप ही हो जाता है, जैसे उसके स्पर्श में जादू हो ।

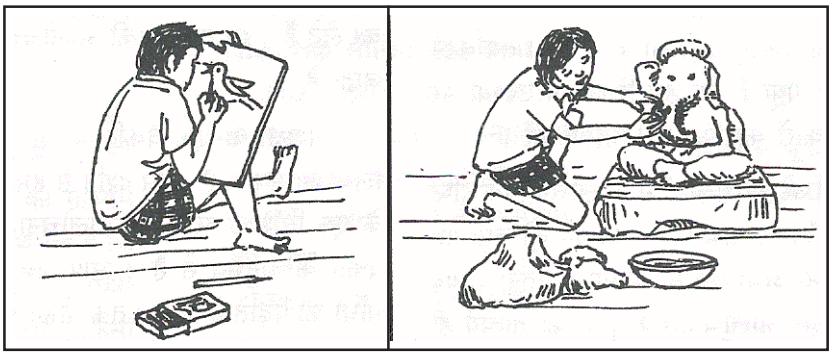

लक्की को बीच में कुछ समय के लिए बागबाहरा से बाहर रायपुर में मूक-बधिर बच्चों की स्कूल में भर्ती करा दिया गया था क्योंकि कुछ लोगों की राय में वह जिस सामान्य स्कूल में पढ़ रहा था, वहां की शिक्षा उसके लिए उपयोगी नहीं लग रही थी । बेशक वह अपना नाम लिखना सीख गया था व लिखे हुए की नकल भी तो वह कर लेता था, परंतु बोली हुई बातों को जब ग्रहण नहीं करेगा और अपने दिमाग से कुछ लिखने पढ़ने की योग्यता हासिल नहीं करेगा तो उसकी पढ़ाई का मतलब क्या ?

लेकिन यह क्या ? परिणाम उल्टा आने लगा । पहले जो थोड़ा बहुत जान-सीख पा रहा था वो भी लक्की से छूटने लगा। दरअसल लक्की मूक-बधिरों की उस स्कूल में स्वयं को कभी भी सहज महसूस नहीं कर पाया। जब कभी उसके मम्मी पापा मिलने जाते तो वह रोता था और दो बार तो हास्टल से भागने का प्रयास भी किया ।

तो इन सब बातों को देखते हुए उसे वापस ला वहीं सामान्य स्कूल में पुन: दाखिल करवाया गया जहां से उसने बीते साल पांचवी से बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है ।

यों सभी के लिए यह ताज्जुब का विषय है कि लक्की जब खुद से पढ़ नहीं पाता और मन से कुछ लिख नहीं पाता है तो पांचवी पास कैसे हो गया । चौथी तक तो जनरल प्रमोशन चला सो ताज्जुब की बात ही नहीं थी, लेकिन पांचवी बोर्ड ? मैं खुद मानकर चल रहा था कि लक्की तो पेपर कर पाएगा नहीं, सो उसे परीक्षा के बारे में कभी पूछा भी नहीं था। लेकिन जब अन्य लड़कों के साथ लक्की भी पास हो गया तो मैंने सीधे ही उसकी मां से पूछा ''दीदी इसने तो पेपर दिया ही नहीं होगा फिर पास कैसे हुआ'' तो पता चला कि शिक्षकों व साथी छात्रों की मदद से लक्की ने दूसरों की उत्तर-पुस्तिका से अपनी उत्तर-पुस्तिका में उतार दिया था। आखिर उसमें देखकर लिख लेने की योग्यता तो है ही न !

मुझे बात ठीक भी लगी कि आखिर लक्की के पास जो योग्यता है उसकी जांच तो हो ही गई न । और जांच में वह खरा उतरा । परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

आजकल जब लक्की के बारे में मैं सोचता हूं तो लगता है कि देखकर उतार लेने की उसकी योग्यता का अधिकाधिक विकास करना ही उसकी शिक्षा का क्या एक अच्छा तरीका नहीं हो सकता? उसकी मां का भी कुछ ऐसा ही सोचना है और वह उम्मीद करती है कि लक्की देख-देखकर व्यवहार भी सीख लेगा । अच्छे-बुरे की पहचान कर सकेगा और इतना समझदार भी हो जाएगा कि अपना पुश्तैनी धंधा पान की दुकान चला लेगा ।

लक्की को उसके घर वाले मन मुताबिक सब करने देते हैं । कुछ दिनों पहले ही अपने पापा से कलर बाक्स मंगवाया है उसने और खाली समय में बस चित्रकारी करता रहता है । गणेश पर्व आ रहा है तो आजकल गणेश की छोटी-छोटी मूर्तियां भी अपने हिसाब से बनाता रहता है, उजाड़ता रहता है ।

आजकल मुहल्ले के छोटे बच्चों की मूर्तियां बनाकर देने की बात कहकर उन्हें अपने पीछे-पीछे घुमा रहा है और बड़ा खुश है कि आखिर मैं भी तो कुछ हूं ! ◆